2015-16

New vision January 2015 Issue: 1

ISSN No. 2394-9996

New Vision

Multi Language Research Journal

January 2015

Anjuman Ishat -e- Taleem Beed's
Milliya Arts, Science & Management Science College,
Beed- 431122 (Maharashtra)
E-mail.ID : newvisionjournal@gmail.com
Website : www.milliyasrcollege.org

INDEX

Sr. No.	Paper Name	Name	Subject	Page No.
(01)	Social values versus political hypocrisy in Nayantara Sahgal's This Time of Morning	Dr. Abdul Anees Abdul Rasheed.	English	01
(02)	Depiction of aspirations and sanguine approach to life in Chetan Bhagat's Five Points Someone: What Not to do at IIT.	Dr. Shaikh Ajaz Perveen Mohd. Khaleeluddin	English	07
(03)	Post-Independence Indian English Fiction: Critical Assessment	Dr. Landage R. A. & Lahoti R. K.	English	12
(04)	The Nowhere Man - Gloomy Shadow of Marginal life in Adopted Society	Smt. Sasane S. S.	English	17
(05)	Portrayal of Upper - Caste Women in Mahesh Elkunchwar's 'Old Stone Mansion'	Dr. Manisha D. Sasane.	English	20
(06)	TREATMENT OF 'TIME' IN WILLIAM FAULKNER'S *THE SOUND AND THE FURY*	Mr. Kivne sandipan Tukaram	English	24
(07)	आधुनिक हिंदी - काव्य में गांधीवाद का प्रभाव	डॉ. मिर्झा असद बेग रूस्तुम बेग	हिंदी	27
(08)	दसवें दशक के लघु उपन्यासों का सामाजिक अध्ययन	प्रो. डॉ. पठाण ए.एम.	हिंदी	31
(09)	`हिंदी ग़ज़ल में समसामयिकता`	प्रा. मुजावर एस.टी.	हिंदी	34
(10)	मौलाना अबुलकलाम आजाद का भारतीय राजनीति में योगदान	डॉ. ओमप्रकाश बन्सीलाल झंवर	हिंदी	36
(11)	चरित्र निर्माण की दृष्टिसे साहित्य की भूमिका: एक अध्ययन	प्रा. डॉ. द्वारका गिते - मुंडे	हिंदी	40

ISSN No. 2394-9996

अनुसंधान है क्या?

डॉ. मीर्झा असदबेग रूस्तुमबेग
हिंदी विभाग अध्यक्ष,
मिल्लीया आर्टस्, सायन्स् ॲण्ड
मॅनेजमेंट सायन्स, कॉलेज, बीड.

दो शब्द ---------

अनुसंधान का अर्थ है - खोज। अनुसंधान को ही शोध के अर्थ में भी पहचाना जाता है। अनुसंधान किसी भी विषय का खोज परक सम्यक ज्ञान होता है। इसके अनेक अर्थ है, जैसे अन्वेषण, निरीक्षण, सूक्ष्मता की दृष्टि से गहन जाँच पड़ताल आदि। साहित्य के क्षेत्र में अनुसंधान का फलक विस्तृत और गंभीर तथा गहन है। ज्ञान के भी भिन्न- भिन्न क्षेत्र हैं। डॉ. तिलक सिंह का कथन है कि - ``ज्ञान के जितने रूप हैं, उन सभी में कुछ समान तत्व हैं तथा कुछ असमान। असमान तत्त्व ही विषयों की पृथक - पृथक सत्ता के आधार हैं। प्रत्येक विषय की अध्ययन - सामग्री एक दूसरे से भिन्न है, किन्तु शोध ऐसा विषय नहीं है और न ही उसकी कोई निश्चित विषय-सामग्री। यह तो ज्ञान के समस्त रूपों के अध्ययन का आधार है। सृष्टि का सम्पूर्ण ज्ञान शोध की वस्तु है।`` उदर्युक्त कथन से स्पष्ट होता है कि अनुसंधान अथवा शोध ज्ञान का अति सूक्ष्म से सूक्ष्म विश्लेषण करने के लिए किया जाता है।

एक विशेष तथ्य यह उल्लेखनीय है कि अनुसंधान कार्य अथवा शोध कार्य पुस्तक लिखने, निबन्ध लिखने, समीक्षा लिखने तथा अन्य किसी साहित्य के लिखने से भिन्न है। उपरोक्त सभी प्रकार के लेखन में लेखक का व्यक्तित्व प्रभावित रहता है परंतु शोध कार्य में ऐसा नहीं होता है। शोध कार्य केवल तथ्यों से प्रभावित रहता है। ये तथ्य निम्नलिखीत बिंदुओं पर आश्रित रहते हैं। यथा- शोध का क्षेत्र, की प्रकृति आदि। शोध विषय के तथ्यों की प्रमाणकिता प्रमुख पक्ष की वैज्ञानिकता तथा निष्कर्ष-निष्पासन की निस्संगता शोध निर्देशक से सम्बन्धित है। प्रबन्ध लेखन,

भूमिका तथा निष्कर्ष निष्पादन के मध्य सन्तुलन स्थापन शोध परीक्षक के कर्तव्य कर्म हैं। ये सभी कारण शोध प्रक्रिया व्यवस्था तथा प्रविधी मै स्थित हैं।

अनुसंधान का क्षेत्र :-

ज्ञान का क्षेत्र जितना व्यापक है उससे की कई अधिक शोध अथवा अनुसंधान का क्षेत्र विस्तृत है। ज्ञान - विज्ञान की समस्त सूक्ष्मताएँ शोध योग्य हैं। साहित्यकारों ने तथा विद्वानों ने सृष्टि के समस्त ज्ञान को तीन भागों में विभक्त किया है। यथा - पुराण तथा इतिहास रूप, शास्त्र रूप तथा काव्य रूप आदि। ये सभी ज्ञान के विषय शोध क्षेत्र की दिशा तथा दशा का निर्धारण करते हैं। शोध क्या है? शोध के कौन कौन से तत्त्व हैं? अथवा शोध में क्या - क्या विशेषताएँ है आदि तथ्यों का विवेचन ही शोध कार्य है। आगरा विश्वविद्यालय शोध नियमावती पृ. 4 में शोध के तत्वों से सम्बन्धित जानकारी इस प्रकार है— "प्राकृतिक जगत में अव्यवस्थित रूप से बिखरे हुए तथ्यों को व्यवस्थित तथा नियमित करना तथा संग्रहीत तथ्यों को विश्लेषित करके उनमें निहित सत्य को स्पष्ट करना, शोध कहताला है। शोध की चार विशेषताएँ इस प्रकार हैं— तथ्यानुसंधान (डिस्कव्हरी ऑफ द फैक्ट्स), तथ्याख्यान (न्यू इन्टरप्रेटेशन आफ द फैक्ट्स), ज्ञान क्षेत्र की सीमाओं का विस्तार तथा सन्तोषप्रद उपस्थापन शैली आदि।"[2]

तथ्यानुसंधान का अर्थ इस प्रकार है— अज्ञात तथा अप्राप्त तथ्यों की खोज। विस्मृत तथा लुप्त तथ्य इसी कोटि में आते हैं। तथ्याख्यात प्राप्त तथा ज्ञात तथ्यों का पुनराख्यान अथवा नवीन व्याख्या है। सूरकाव्य का सांस्कृतिक विश्लेषण तथा श्री रामचरित मानस के कथातत्व के उद्‌भव और विकास एवं श्री रामचरितमानस में इस विधान आदि समस्त शोध के कार्य इसी श्रेणी में आते हैं। शोधार्थी को शोध सामग्री में अद्यावधि सम्पन्न कार्यों को अपने मन में स्मरण रखते हुए उसमें कुछ नया जोड़ना ही ज्ञान क्षेत्र की सीमाओं का विस्तार है। शोध की शैली वैज्ञानिक होती है। कहीं - कहीं शैली अलोचना की शैली से प्रभावित हो जाती है। यह शैली दोष है। शोध की शैली वस्तुनिष्ठ होनी चाहिए। विशेष बात यह है कि अनुसंधान का क्षेत्र आलोचनात्मक परीक्षण, तथ्य विश्लेषण तथा वर्गीकरण तक ही सीमित है। शोध के विषय में विद्वानों में मतभेद हैं। कुछ विद्वानों का कथन है कि शोध विज्ञान है कुछ का कहना है कि शोध कला है। परन्तु देखा जाये तो यह मालुम होता है कि कलात्मक अभिव्यक्ति तथा वैज्ञानिक विवेचन दोनों में भिन्नता है। आलोचना की शैली कलात्मक तथा शोध की शैली वैज्ञानिक होती है यह प्रमाणित तथ्य है। अतः सिद्ध होता है कि शोध प्रकृतितः अथवा प्रविधितः विज्ञान की कोटि में आयेगी कला

की कोटि में नहीं। शोध में प्रामाणित तथ्य ही महत्वपूर्ण माने जाते हैं कपोल - कल्पित तथ्यों का शोध में कुछ भी अस्तित्व नहीं है।

शोध के आकार के सम्बन्ध में विद्वानों का कथन है कि— " यदि शोध का विषय साहित्य है तो आकार कुछ बड़ा होगा। यदि विषय काव्यशास्त्र, पाठानुसंधान अथवा भाषाविज्ञान का है तो आकार कुछ छोटा होंगा। हिन्दी में लिंग विधान का आकार विस्तृत होगा। पूर्वी हिन्दी में लिंग विधान का पहले की अपेक्षा सीमित होगा। अवधी में लिंग विधान विषय का और भी सीमित होगा। तुलसी की अवधी रचनाओं में लिंग विधान अत्याधिक सीमित होगा। तुलसी के श्रीरामचरितमानस में लिंग विधान उक्त सभी शोध विषयों से भी अधिक सीमित होगा।"[3]

मानव ज्ञान के प्रत्येक विषय का एक निश्चित कथ्य है। सर्वांगस्पर्शी ज्ञान ही आत्मतोष उत्पन्न कर सकता है। आत्मतोष ज्ञान की प्रामाणिकता तथा पूर्णता में ही विहित है। अपरिचित तथा अस्पष्ट ज्ञान क्षेत्र को ज्ञात करना अथवा स्पष्ट करना, प्रकृति में व्याप्त अव्यवस्थित तथा अपार ज्ञानराशि की व्यवस्थित तथा क्रमबद्ध करना या आधुनिकता की दृष्टि से उपयोगी बनाना ही शोध या अनुसंधान है। प्रत्येक युग की ज्ञानधारओं के अनुसार ही साहित्य की विभिन्न विधाओं में विभन्न परिस्थितिगत परिवेशों का प्रौधोगिकी ज्ञान-श्रेणियें ने आधुनिक साहित्य की विचारधारा को बहुत कुछ परिवर्तित कर दिया है।

शोध या अनुसंधान की प्रक्रिया तीन चरणो से जुड़ी हुई है। डॉ. नगेन्द्र का शोध के संदर्भ में कथन है कि "शोध क्रिया विधी के प्रमुख अंग हैं— सामग्री संकलन, परीक्षण (प्रमाणीकरण), त्याग और ग्रहण, विश्लेषण - संश्लेषण (वर्गीकरण), निष्कर्ष और निर्णय।"[4] शोध कार्य के प्रारंम्भ से परिसमाप्ति तक विविध कार्य व्यापारों को प्रक्रिया कहते हैं। शोध कार्य श्रृंखला की विविध कड़ियाँ प्रक्रिया हैं। शोध कार्य शोधकर्ता तथा शोध निर्देशक के सहकार्य व्यापारों से जुड़ा हुआ होता है।

निष्कर्ष -

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि अनुसंधान का महत्वपूर्ण पक्ष शिक्षा के माध्यम में कौनसी भाषा हो इस पर निर्भर करता है। 1920 ई. में इटली में प्रसिद्ध शिक्षाविद ज्योवेनी जेन्टाईल ने यह लागू किया था कि प्राथमिक शिक्षा का माध्यम क्षेत्रीय भाषाएँ हों तथा उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम तथा अनुसंधान के क्षेत्र मानक भाषा तथा क्षेत्रीय भाषाओं के व्यतिरेक पद्धति के आधार पर बनाएँ जायें। अनुसंधान के

विषय जटिल न होकर सरल होने चाहिए। अनुसंधान से समाज को दिशानिर्देश एवं सच्चे मार्ग पर चलने की प्रेरणा प्राप्त हो यही अनुसंधान का मुख्य उद्देष्य होना चाहिए। उद्देष्यहीन अनुसंधान समाज एवं पाठकगणों के लिए हानिकारक होता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1) नवीन शोध विज्ञान - डॉ. तिलक सिंह, पृ. 9

2) आगरा विश्वविद्यालय शोध नियमावली - पृ. 4.

3) नवीन शोध विज्ञान - डॉ. तिलक सिंह, पृ.11

4) शोध और सिद्धन्त - डॉ. नगेन्द्र, पृ.37.

☆☆☆